

विश्वविद्यालय में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन

सागर: 21.06.2021—

पंचभौतिक शरीर को आत्मा से संबोधित करने से मनुष्य का कल्याण संभव— प्रो० गिरीश्वर मिश्र

कोरोना द्वारा उत्पन्न विषम परिस्थितियों में दूर दूर रहते हुए भी तकनीक के संयोग से जुड़कर हम अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस को उत्सव के तौर पर मना रहें हैं। यह योग का ही कमाल हो सकता है। उक्त उद्गार प्रो० गिरीश्वर मिश्र—पूर्व कुलपति महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय वर्धा ने मुख्य अतिथि के रूप में योग शिक्षा विभाग डा० हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर व्यक्त किये। प्रो० मिश्र ने कहा कि पंचकोशीय शरीर की अवधारणा न समझ पाने के कारण हम शरीर हैं, ये अज्ञान, अविद्या के वशीभूत हम समझ बैठते हैं। वास्तविक रूप में हमारे साथ केवल शरीर रूपी साधन है जो आत्मा की मुक्ति के लिये चोला स्वरूप प्राप्त होता है। इसकी मुक्ति हेतु आध्यात्मिक योग विद्या के अभ्यास और चित्त वृत्ति निरोधक विभिन्न उपायों की साधना करने के लिए ये शरीर धारण किया जाता है। जो मनुष्य इस तत्व का ज्ञान प्राप्त कर लेता है वह मुक्तात्मा हो जाता है। पंचभौतिक शरीर को आत्मा से संबोधित करेंगे तो मनुष्य मात्र का कल्याण संभव हो सकेगा।

योग की रोग प्रतिरोधक क्षमता तथा रोग से बचाव की भूमिका को पूरे विश्व ने माना— कुलपति

अध्यक्षीय उद्बोधन में विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो० जनक दुलारी आही ने कहा कि कोविड ने जीवन की हर दशा और दिशा को प्रभावित किया है। इस दिवस को मनाने की आवश्यकता तथा इसमें निहित संदेश के माध्यम से योग को व्यापक आधार प्राप्त हो रहा है। रोग प्रतिरोधक क्षमता के विकास तथा रोग से बचाव में योग की भूमिका संयुक्त राष्ट्र महासंघ, विश्व स्वास्थ्य संघटन तथा विश्व के सभी देशों द्वारा स्वीकार करते हुए कोरोना महामारी नियंत्रण दिशा निर्देशों में योगाभ्यास क्रियाओं को शामिल करना, इस विषय के महत्व को बढ़ाता है। शारीरिक रोगों जैसे हृदय रोग, मधुमेह, रक्तचाप, श्वसन एवं कफजन्य रोग तथा मानसिक व्याधियों जैसे चिंता, तनाव, भय, अनिद्रा, क्रोध आदि के नियंत्रण में योग की भूमिका शोधकार्यों द्वारा प्रमाणित की जा चुकी है। अपनी विरासत को संभालने का दायित्व विश्वविद्यालय के विद्यार्थीयों पर है वे लगन और मेहनत से योग विद्या सीखकर स्वस्थ समाज के निर्माण में सहयोग करें।

विशिष्ट अतिथि प्रभारी कुलसचिव संतोष सोहगौरा ने कहा कि इस आयोजन में मालदीव, केरल से लेकर आसाम, बंगाल तक के प्रतिभागी जुड़े हैं जो इसकी गरिमा को बढ़ाता है। योग आंतरिक और बाह्य शुद्धि की प्रक्रिया है जिससे यह मंदिर रूपी शरीर एवं देवता रूपी मन निर्मल एवं शुद्ध होता है ऐसे व्यक्ति जिनके शरीर और मन स्वच्छ एवं साफ हो जाते हैं वे आत्मोपलब्धि की अवस्था तक पहुंच जाते हैं जहां केवल सत् चित् आनंद स्वरूप रह जाता है।

योग दिवस की शुभकामनाएं देते हुए योगविभागाध्यक्ष प्रो० गणेश शंकर गिरी ने विभागीय गतिविधियों पर प्रकाश डाला। प्रो गिरी ने कहा कि भारत सरकार के दिशा निर्देशों में आनलाईन आयोजन की थीम घर पर योग—परिवार के साथ योग पर सामान्य प्रोटोकाल अभ्यास कराया गया है।

विभागीय छात्रा अनुराधा सोनी ने गणेश वन्दना प्रस्तुत की। विद्यार्थीयों ने विभिन्न योगाभ्यासों का प्रदर्शन किया। प्रतिभागीयों के तौर पर इरनाकुलम—केरल से डा० अभिलाष मुल्लावेरिल, हावडा से डा० तामल चक्रवर्ती तथा विश्वविद्यालय के प्रो० अस्मिता गजभिए ने इस कार्यशाला से प्राप्त अनुभव एवं संस्मरण प्रस्तुत किये। कार्यक्रम का संचालन डा० नितिन कोरपाल तथा आभार ज्ञापन डा० अरूण साव ने किया।

इस अवसर पर विभिन्न स्थानों में निवास करने वाले योग विभाग के विद्यार्थीयों ने विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों को भी आनलाईन प्रस्तुत किया। योगाभ्यास, नृत्य, गीत, कविता, परिचर्चा आदि के माध्यम से कोरोना एवं योग द्वारा प्रबंधन पर सुव्यवस्थित प्रस्तुतियों ने सभी को अभिभूत कर दिया। इस अवसर पर प्रो० अर्चना पाण्डेय, प्रो० ए०पी०मिश्र, प्रो० एस०के जैन, प्रो० आर०के० रावत, प्रो० अशोक अहिरवार, प्रो०ए०के० शांडिल्य, डा० ब्रजेश ठाकुर, डा० सत्यनारायण देवलिया, डा० राहुल स्वर्णकार, प्रज्ञा साव, सहित विश्वविद्यालय परिवार के शिक्षक, कर्मचारी एवं प्रतिभागी उपस्थित थे।